चित्रों को देखकर भी हंसी आती है। ऐसे चित्र कोई होते नहीं हैं। वास्तव में तो रांग है। ना यह शंख आदि ही है। शंख,गदा ,चक्र,फूल आदि सब यह ब्राह्मणों की ही निशानी है। सर्विस बढ़ाने के लिए म्यूजियम मिसल सैंटर होना चाहिए। वो ही सर्विस को बढ़ा सकता है। अबलायें मातायें बिना चित्रों के समझ नहीं सकेंगी। म्यूजियम होता है पुराने चित्रों का। यह है नये चित्रों का। तुम इन चित्रों पर समझा सकते हो कि सतयुग में देवताओं का राज्य था तो शांति थी। अब असुरों का राज्य है तो अशांति है। इनका जब विनाश हो तब शांति हो। (पुरानी)कलियुगी दुनियां का विनाश सामने खड़ा है। विश्व में शांति होती ही है ल.ना. के राज्य में। उनकी राजाई को 5हजार वर्ष हुआ। कहते भी हैं कि क्राइस्ट से 3हजार साल पहले .....भी एक ही राज्य था। एक (ही)धर्म था। यही कोशिश कर रहे हैं कि लड़ाई नहीं लगे ;परंतु लड़ाई लगने बिना वा अनेक धर्मों का विनाश हुये बिना शांति हो ही कैसे सकती है?एक धर्म की स्थापना हो रही है सो तो हैविनली गॉडफादर (का)ही काम है। बच्चों को खुशी होनी चाहिए। आसुरी गुण छोड़कर दैवी गुण धारण करने हैं। निन्दा ,चुगली करने से सत्यानाश हो जाती है। गोप–गोपियों को यह खुशी है कि बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। उनके ही हम बच्चे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तो दोनों ही होंगे ना। बहन और भाई। उनको पवित्र भी जरूर रहना है। तुम तो प्रदर्शनी कर फिर चले आते हो। इससे तो म्यूजियम होवे तो अच्छा रहेगा। सो भी एक शहर में बड़े2 10/12 म्यूजियम होने चाहिए। बाप तो बच्चों को पुरुषार्थ करवाते हैं कि पैगाम दो सबको। दुनियां थोड़े ही जानती है। अगर पैगाम नहीं देते हो तो पैगम्बर के बच्चे ही कैसे ठहरे?ल.ना. के चित्र से समझेंगे कि भारत में इन ल.ना. राज्य था। चतुर्भुज विष्णु से क्या समझेंगे?राइट चित्र तो (ल.ना.)यह है ना। कोई भी नहीं जानते हैं कि यह शंख,चक्र,पदम,गदा आदि ब्राह्मणों को ही होता है। गुडनाइट।

<u>3–7–67 रात्री क्लास</u>– चित्र भी सभी रखे हुये हैं। सर्विस पर ही जो रहते हैं तो दिल पर ही याद है। सारी सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का राज बुद्धि (में) है। चित्र को देखने की जरूरत नहीं है। औरों को समझाने मात्र थोड़े से चित्र बनाये जाते हैं। उसमें भी त्रिमूर्ति है मुख्य। सीढ़ी भी समझाने लिए बहुत अच्छी है। दिखाते हैं कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना तो जरूर ब्रह्मा ही चाहिए। हम ब्र.कु.कु. है तो जरूर बाप का ही चित्र रखेंगे ना। इन द्वारा बाप बैठ समझाते हैं। बहुत सहज है। यह भी बच्चे जानते हैं कि बाप आया हुआ है। साथ में ले जाना है। पुराने कर्मबंधनों को भी युक्ति से काटना है। कोई2 का बहुत कर्मबंधन कड़े होते हैं। यह कोई नई बात नहीं है। यह अत्याचार कल्प पहले भी हुये थे। अब बाप ने फरमान निकाला है कि काम महाशत्रु है। इन माया को जीते जगतजीत बनना है तो तम विश्व का मालिक बन जावेंगे। बाप जो सिखाते हैं वो सीखना है। श्रीमत पर चलना है। बहुत सहज रास्ता बताता हूँ कि तुम मुझे याद करो तो तुम पावन देवता बन जावेंगे। बच्चों को पता है कि हम ही पूज्य थे ,हम ही अब पूज्य बन रहे हैं। बहुत खुशी होनी चाहिए पुराना हिसाब–किताब चुक्तू करते हो। इसमें मूंझने,थकने की बात ही नहीं है। बाबा नब्ज देखकर ही राय देते हैं। राय पर अगर वो नहीं चले तो और ही उसका नुकसान हो जावेगा। बाबा हर एक का कारण देखते हैं। अच्छा जोर से कमाते हो तो सेन्टर्स भी जोर से ही खोलते जाओ ;परंतु ऐसे2 श्रीमत पर चलने वाले भी बहुत कम हैं। धन में मदद करने वाले भी बहुत कम हैं। बच्चों को मेडिल लगा ही रहना चाहिए। यही है यादगार। उनको देखने से सारा चक्र याद आ जाता है। बाप की याद भी रहेगी तो विकर्म भी विनाश होंगे। यह बैजिज है अंधों की लाठी। व्यवहार में रहने पर क्लास रोजाना करना चाहिए। उससे ही अच्छी रिफ्रेशमेंट मिलती रहती है। क्लास में जरूर ज्ञान का प्याला रोज पीना चाहिए। कोई बीमार होकर थोड़े समय बाद फिर अच्छे हो जाते हैं तो कितनी खुशी होती है। तो तुम्हारी भी बीमारी दूर होती है ना। गुडनाइट।